बांस

आमदनी का अच्छा जरिया

जहाँ तक अंतराल का प्रश्न है। बांस का रोपण 4ङ्क4 मी. के अंतराल पर करना लाभदायक पाया जाता है। रोपण हेतु गड्ढे रोपण करने के लगभग 1 माह पहले खोदकर छोड़ दिये जाना चाहिये। ताकि उनका रोपण के पूर्व प्राकृतिक उपचार हो सके।

पौधों का रोपण

बांस का रोपण वर्षा ऋतु के प्रारंभ के समय किया जाना चाहिये। रोपण हेतु 6 से 9 माह आयु में पौधों का उपयोग करना लाभदायक पाया गया है। बांस में पौधों का रोपण 30ङ्क30ङ्क30 से.मी. आकार के गड्ढों में किया जाना चाहिये। रोपण के पूर्व गड्ढे मिट्टी एवं 10 किलोग्राम कम्पोस्ट खाद के मिश्रण से भर दिये जाते हैं। तत्पश्चात पॉलीथीन थैलियों में तैयार किये गये पौधे थैलियों को फाड़कर मिट्टी सहित गड्ढों में रोपित कर दिये जाते हैं। जहाँ तक अंतराल का प्रश्न है। बांस का रोपण 4ङ्क4 मी. के अंतराल पर करना लाभदायक पाया जाता है। रोपण हेतु गड्ढे रोपण करने के लगभग 1 माह पहले खोदकर छोड़ दिये जाना चाहिये। ताकि उनका रोपण के पूर्व प्राकृतिक उपचार हो सके।

रोपण हेतु उपर्युक्त स्थल

बांस प्राकृतिक रूप से ढालू जमीन पर अच्छा बढ़ता है। अतः इसके रोपण का चयन किया गया स्थल ढालू होना चाहिये।

रासायनिक खाद का प्रयोग

बांस की अच्छी वृद्धि हेतु उपयुक्त खादों के प्रकार तथा मात्राओं पर अनुसंधान कार्य हेतु हैं। इनमें से एक का परिणाम यह है कि बांस भिर्रे में 50 ग्राम यूरिया तथा 20 ग्राम सुपर फास्फेट की खुराक देना लाभदायक होता है। एक निष्कर्ष यह भी है कि यूरिया खाद (20 ग्राम प्रति पौधा) का उपयोग प्रथम तथा पांचवे वर्ष में किया जाना सर्वाधिक लाभप्रद होता है। खाद की खुराक देने के तुरंत पश्चात पौधों की सिंचाई की जाना आवश्यक है।

बांस रोपण की आर्थिकी

बांस की उपयोगिता अधिक होने के कारण प्राइवेट व्यक्ति कृषक इसका रोपण करके व इसका व्यापार करके अच्छा लाभ कमा सकते हैं। देशी बांस डेन्ड्रोकेलामस स्ट्रिक्टस

उत्पादन एवं आय

बाँस के भिर्रो से तीन प्रकार के बांस प्राप्त होते हैं - सूखे बांस, टेढ़े-मेढ़े बांस एवं अच्छे बांसों के पतले टुकड़े-ये सब एक श्रेणी में रखे जाते हैं तथा इन्हें औद्योगिक बांस कहा जाता है। इसका उपयोग कागज बनाने के कारखानों में किया जाता है। अच्छे बांस व्यापारिक

बांसों के नामों से जाने जाते हैं। इनका उपयोग निर्माण कार्य हेतु किया जाता है। सूखे बांसों को तोल करने पर एक टन वजन में लगभग 250 बांस आते हैं। इनको बाजार में 1000-1200 रुपये प्रति टन के भाव से वर्तमान समय से बेचा जाता है। व्यापारिक बांस औसतन 15/-प्रति बांस की दर से फुटकर बाजार में बिकता है। वैसे बहुत अच्छे बांस 50/- प्रति बांस तक बिकते हैं। बांस की कीमत अच्छी लम्बाई-मोटाई तथा पकने की स्थिति पर निर्भर करती है। बांस के रोपण में सामान्यतः 6-7 वर्ष की आयु में उपयोगी बांस प्राप्त होने लगते हैं। 6वें वर्ष से प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में औसतन 3000 बाँस प्रति वर्ष प्राप्त होंगे। इनमें से 20 प्रतिशत बांस औद्योगिक श्रेणी के हो सकते हैं। जिनका वजन लगभग 3 टन होगा। शेष 2400 बांस 2400315 = 36000/- में बिकेंगे। औद्योगिक बांसों की बिक्री से होने वाली आय को मिलाकर कुल आय 39000/-रुपये प्रति वर्ष होगी। कटाई का व्यय (औसतन 0.50/- प्रति की दर से) लगभग 1500/- रु. होगा। अन्य खर्च को मिलाकर कुल व्यय लगभग रुपये 2000/- प्रतिवर्ष होगा। फिर भी शुद्ध आय 37000/-प्रतिवर्ष हो सकेगी। यदि जमीन अच्छी नहीं है तो भी 20000/-रु. से 30000/- रुपये बांस फूलेगा तब सभी भिर्रे सूख जावेंगे। औश्र इस समय लगभग 40 टन सूखे बांस प्राप्त होगा। जिसकी कीमत आज की दर के आधार पर 48000/- रुपये होगी इस प्रकार हम पाते हैं कि रोपण की स्थापना पर किया गया व्यय पहले उत्पादन (छटवें वर्ष में) ही वापस हो जाता है। आगे के वर्षों के नाममात्र व्यय के बाद काफी बढ़ा लाभ होगा।

जरा सी सावधानी

सुरक्षित अनाज

वर्तमान समय में रबी की फसलों की कटाई एवं गहाई चल रही है इसके बाद भंडारण करना है इसलिये कटाई करते समय ध्यान रखें फसलें अच्छी तरह पकी हों अन्यथा कच्चे रहने पर दाने छोटे व सिकुड़ जाते हैं और यदि अधिक दिनों तक फसल पकी हुई खड़ी रहने पर कटाई के समय दाने व फलियां जमीन पर झड़ जाते हैं जिससे उपज घट जाती है. इसलिये सभी फसलों की पकने की उचित अवस्था में कटाई करें कटाई के लिये कई पहलू हैं जिसमें पत्तियां फलियां पीली पड़ना, पत्तियां गिरना, दाने में नमी की मात्रा जो पकने में देखे जाते हैं साथ ही कटाई उचित यंत्र से कटाई करें जिसमें रकबा व उपलब्ध मजदूर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसमें ट्रैक्टर व मशीन चलित कम्बाईन, हारवेस्टर व मोवर, बैल चलित यंत्र रीपर से करना चाहिए इस समय नमी 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए तथा मानव चलित उपकरण हसिया, गंडासा उपयोग होता है. कटाई के बाद फसल को सुखाना हो तो उसे बंडलों में बांधकर खेत में 3-4 दिन सुखा लें. इसके बाद पूर्ण रूप से सूखने पर लगभग नमी फसलों में 15% के आसपास हो तब दांव चलाकर, डंडे से पीटकर या थ्रेसर द्वारा दाना-भूसा अलग कर लें. साथ ही देख लें अधिक नमी या यंत्र की खराबी से दाना टूट तो नहीं रहा. तेल वाली फसलों को अधिक समय तक खलिहान में गहाई के लिये फसल को भंडारित कर नहीं रखना चाहिए क्योंकि इससे तेल प्रतिशत घट जाता है साथ की कीड़ों द्वारा भी हानि पहुंचाई जाती है. अनाज को भंडारण से पहले सुखाना बहुत जरूरी है. जिससे उसमें नमी अधिक न रहे अन्यथा कीड़े व फफूंद द्वारा उत्पादन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है. जिसमें सभी फसलों के लिये नमी प्रतिशत अलग-अलग होता है जैसे-अनाज वाली फसलों 12% तिलहनी फसलों में 8%, दलहनी फसलों में 9% नमी भंडारण हेतु उपयुक्त मानी जाती है. इसके लिये बीजों को दांतों से तोड़कर कट की आवाज आने पर सही नमी का अंदाजा लगाया जा सकता है.

उपरोक्त के अलावा फसलों की कटाई, गहाई व उसके रखरखाव हेतु निम्नलिखित सावधानियां रखना चाहिए-

- फसल की कटाई साफ व धूप वाले मौसम में करना चाहिए.
- गहाई मशीन के नट अच्छी तरह कसे होना चाहिए इसके लिये कार्य करते समय अवांछनीय आवाज आये तो मशीन रोककर ठीक कर लेना चाहिए.
- थ्रेसिंग मशीन पर कार्य करने वाले ढीले-ढाले कपड़े नहीं पहनना चाहिए उलझ सकते हैं.
- खलिहान में आदमी बीड़ी- सिगरेट न पियें आग लग सकती है.
- खलिहान साफ-स्वच्छ, ऊंचे स्थान जहां वर्षा होने पर पानी भरे नहीं तथा आसानी से निकल जाये ऐसे स्थान का चयन करना चाहिए.
- फसल के बंडल थ्रेसर के पास रखें जिससे मजदूरों को थ्रेसिंग करते समय अधिक क्षमता से गहाई कर सकें.

दुधारू पशुओं की देख-रेख

दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए. संक्रामक रोगों का टीकाकरण समय रहते अवश्य कराना चाहिए. बाह्य एवं आंतरिक परजीवियों को दूर करने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए. दुधारू पशुओं में थन एवं अयन की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

- पशु के पोषण में लगभग 70ज खर्च होता है. दुग्ध उत्पादन तभी लाभदायी हो सकता है, जब पशुओं को संतुलित आहार मिले तथा उसकी लागत कम आये. हरा चारा दुधारू पशुओं के लिये अमृत के समान है. 6 से 8 लीटर दूध देने वाले पशुओं की आवश्यकता की पूर्ति मात्र पेट भर हरा चारा उपलब्ध कराने से भी की जा सकती है. 1.5 किलो जीविका आहार के साथ पशु की दूध उत्पादन क्षमता के अनुसार बांटा दिया जाना चाहिए. भैंसों में 2 लीटर दूध उत्पादन पर 1 किलो बाटा तथा गायों में 2.5-3.0 लीटर दूध पर 1 किलो बाटा दिया जाना चाहिए.
- पशुओं की अच्छी आवास व्यवस्था भी दूध उत्पादन अच्छा रखने में सहायक होती है. गौशाला इस प्रकार की बनाई जानी चाहिए जिससे सूर्य की किरणें उत्तर की ओर अधिक पड़ें और दक्षिण की ओर कम से कम, जिससे गर्मियों एवं सर्दियों में पशुओं की रक्षा की जा सके. गाय एवं भैंसों के लिये 30-35 वर्ग फीट प्रति पशु जगह की आवश्यकता होती है. बाहरी बाड़ा के लिये 20-100 वर्ग फुट स्थान होना चाहिए. पूंछ से पूँछ विधि गौ पशुओं के लिये सबसे अधिक उपयोगी पाई गई है.

इस विधि की विशेषताएं हैं कि गौ शाला की साफ-सफाई अच्छी की जा सकती है. जिससे पशुओं को बीमारी से बचाया जा सकता है. संक्रामक बीमारियाँ आसानी से नहीं फैल पाती हैं. थन एवं अयन की बीमारियों का तुरंत पता लगाया जा सकता है. पशुओं और नालियों की साफ-सफाई अच्छी तरह से की जा सकती है.

- दुधारू पशुओं से अधिक दूध उत्पादन के लिए स्वच्छ पानी की उपलब्धता अत्यंत आवश्यकता है. पशु बिना भोजन के तो रह सकता है. परंतु बिना पानी के नहीं. क्योंकि पानी शारीरिक क्रियाओं के संचालन एवं दूध उत्पादन के लिए आवश्यक है. प्रत्येक दुधारू पशु को लगभग 100 लीटर पानी की प्रतिदिन आवश्यकता होती है.
- दुधारू पशुओं को प्रेम पूर्वक रखना, उनसे अच्छा व्यवहार करना, बाह्य परजीवी जूं किलनी इत्यादि को अलग रखना. क्योंकि बाह्य परजीवी पशु का खून चूसते हैं और दूध उत्पादन क्षमता पर प्रभाव डालते हैं.

अतः जब भी मौसम में बदलाव आता है, उस समय बाह्य परजीवी जैसे जूँ और किलनी मारक दवाइयों का प्रयोग करना चाहिए.

- जहाँ तक सम्भव हो दुधारू पशुओं को शोर से दूर रखा जाना चाहिए. शोर का प्रभाव उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता पर पड़ता है.
- अच्छे दूध उत्पादन करने वाले पशुओं की पहचान की जानी चाहिए. जो पशु कम दूध उत्पादन अर्थात 2-3 लीटर दूध देते हैं. उनकी छटनी कर देनी चाहिए. प्रतिवर्ष 15-20 प्रतिशत गौ शाला के पशुओं की छटनी की जानी चाहिए जिससे लगातार अधिक दूध उत्पादन प्राप्त हो सके.
- गौ शाला में एक निश्चित दिनचर्या का पालन किया जाना चाहिए. इसमें बदलाव करने से दूध उत्पादन क्षमता पर प्रभाव पड़ता है. यदि कोई बदलाव करना है तो पशुओं की शुष्क अवस्था में किया जाना चाहिए.
- पशुओं का दूध दुहते समय अच्छा प्रबंध करना चाहिए. यह एक विशेष कार्य है. दोहने वाले व्यक्ति की क्षमता दूध उत्पादन पर बहुत प्रभाव डालती है. दूध निकालने की प्रक्रिया 5-7 मिनिट में पूर्ण हो जानी चाहिए.वरना पशु दूध को रोक सकता है. इसलिए दूध दोहने में जो व्यक्ति पारंगत है उनसे ही दूध निकलवाना चाहिए. इससे पशु की वास्तविक दूध उत्पादन क्षमता का पता लगाया जा सकता है.
- गर्मियों में अधिक दूध देने वाले पशुओं का विशेष प्रबंध किया जाना चाहिए. गाय एवं भैसों को नहलाना, गौ शाला में ठंडा वातावरण रखना, सुबह और शाम को भोजन देना चाहिए. साइलेज का इस्तेमाल, भूसे का यूरिया उपचार किया जाना चाहिए जिससे उत्पादन को गिरने से बचाया जा सके.
- अच्छे दूध उत्पादन के लिये अच्छी प्रजनन क्षमता को बनाये रखना बहुत ही जरूरी है.

पशु की उत्पादन क्षमता छटवीं ब्यात तक होती है. आदर्श प्रजनन क्षमता एक बछड़ा/बछिया प्रतिवर्ष है. यदि प्रजनन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया तो किसान को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है.

दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए. संक्रामक रोगों का टीकाकरण समय रहते अवश्य कराना चाहिए. बाह्य एवं आंतरिक परजीवियों को दूर करने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए. दुधारू पशुओं में थन एवं अयन की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए. वरना थनैला रोग होने की संभावना हमेशा बनी रहती है. थनैला रोग की जाँच स्ट्रिप कम विधि से समय-समय पर की जाना चाहिए. ग्रामीण परिवेश में साफ-सफाई पर ध्यान नहीं दिया जाता है, जिससे थनैला रोग होकर एक या दो थन खराब हो जाते हैं और किसानों को काफी आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है.